मुजफ्फर नगर के दंगे –कारण व समाधान

पिछले दिनो मुजफ्फर नगर मे साम्प्रदायिक दंगे हुए जिसमे कई बेगुनाह मारे गये। प्रशासनिक तौर पर मरने वालो की संख्या 47 के आस पास बताई जा रही है। संभव है कि इससे अधिक लोग भी मरे हो । दंगे हिन्दुओ और मुसलमानो के बीच हुए। जिसमे मरन वालों की संख्या स्वाभाविक रूप से मुसलमाना की अधिक दिखती है।

मुजफ्फर नगर के दगे दो कारणो से हुए। 1. एक हिन्दू लडकी के साथ छेड छाड। 2. स्थानीय मुसलमानो द्वारा कानून अपने हाथ मे लेने की पहल। 1. एक मुसलमान युवक ने एक हिन्दू लडकी के साथ छेड छाड की। लडकी सहमत नही हुई फिर भी लडके ने छेड छाड जारी रखी । लडकी के भाइया ने लडके के साथ मार पीट की। जिसमे उस लडके की मृत्यु हो गई। यह घटना दो परिवारा तक सीमित थी । उस लडके के गांव के मुसलमानो ने साम्प्रदायिक स्तर पर इकटठा होकर उन दोनो लडको को पकड लिया और दोनो लडको की मार मार कर हत्या कर दी। उसके बाद दोनो पक्ष के लोग साम्प्रदायिक तौर पर अलग अलग इकटठे होकर मीटिंग करने लगे। मुसलमानों ने अलग मीटिंग की और हिन्दुआ ने अलग । मुसलमाना की मीटिग मे भी भडकाउ भाषण दिये गये तथा हिन्दुओ की मीटिंग मे भी । सभी राजनैतिक दलो के लोग साम्प्रदायिक तौर पर मीटिंग मे शामिल होने लगे। मुसलमानो की मीटिंग के बाद कोई टकराव नही हुआ किन्तु हिन्दुओ की मीटिंग के बाद वापस लौट रहे हिन्दुआ के साथ अलग अलग मुस्लिम बहुल इलाको मे हमले हुए, जिसमे कुछ हिन्दू लोग मारे गये और कुछ लोग गायब कर दिये गये। इस आक्रमण की तीव्र प्रतिक्रिया हुई और हिन्दुओ ने मुसलमानो पर संगठित होकर आक्रमण किये जिसे गांव के अल्पसंख्यक मुसलमान झेल नही सके और रोकने के लिये सेना बुलानी पडी। सेना के आने के बाद शान्ति तो अवश्य हुई है, दंगे और हत्याय भी रूकी है, किन्तु साम्पदायिक विश्वास अभी तक नही बन सका है। बडी मात्रा मे मुसलमानो का पलायन हुआ है, जिन्हे लौटने मे कुछ समय लगना स्वाभाविक है। चूकि घटनाएं लडकी के साथ छेडछाड तथा मुसलमानो द्वारा सामूहिक आक्रमण की पहल के दो कारणो पर आधारित है, अतः दोनो कारणो पर अलग अलग विचार करके ही समाधान खोजा सकता है।

स्पष्ट है कि छेडछाड के मामले लडका के द्वारा ही होतें है, लडकियों के द्वारा तो नही के बराबर। छेडछाड की घटनाएं विवाहित महिलाओं के साथ भी कम होती है। मैने तो नही सुना कि विवाहित महिलाओं पर भी कभी तेजाब फका जाता हो अथवा विवाहित महिलाओ के कारण भी ऐसे दंगे होते हो। हो सकता है अपवाद स्वरूप हुए भी हों लेकिन आमतौर पर ऐसा नही होता। छेडछाड की घटनाएं आपस मे तो होते रहतो है, लेकिन मुस्लिम युवका द्वारा हिन्दू लडकी के साथ छेडछाड की घटनाओ का प्रतिशत ज्यादा है और हिंन्दू युवकों द्वारा मुस्लिम लडकी के साथ छेडछाड की घटनाओं का प्रतिशत कम। इसके कई कारण है। इस्लाम एक संगठन है और हिन्दुत्व एक धर्म। इस्लाम मे चार विवाह तक छूट है। हिन्दू मे एक से अधिक पर रोक है। इस्लाम में हिन्दु लडकी को मुसलमान बना लेना समाजिक दृष्टि से कोई बुराइ नही मानी जाती बल्कि कुछ न कुछ उसे अच्छा ही माना जाता है। जबकि हिन्दुओ मे इस कार्य को पारिवारिक बुराई भी माना जाता है और सामाजिक बुराई भी। इस्लाम मे विवाहित लडको द्वारा भी अविवाहित लडकी को बहकाना फुसलाना प्रतिबंधित नही है, जो हिन्दओ मे है तथा हिन्दुओ के लिये तो कानून से भी ऐसा करना वर्जित है। एक कारण और है कि वैसे ही हिन्दू और मुसलमानो मे कुल मिलाकर लडकियों का अभाव है। जो मुसलमाना मे और भी ज्यादा है, क्योकि उनमे चार विवाह तक छूट है। यह एक महत्वपूर्ण कारण है कि मुसलमान लडके हिन्दु लडकियों की ओर अधिक आकर्षित होते है अथवा अधिक प्रयत्नशोल होते है।

ऐसी बात दंगे का रूप लेने का एक दूसरा कारण है–इस्लाम का संगठन होना । मुजफ्फर नगर मे उस छेडछाड करने वाले लडके को लडकी क दो भाइयों ने जाकर मारा था, हिन्दुओ ने नही। यह पारिवारिक विवाद तक सीमित था। किन्तु इन दोनो लडको को उस मरने वाले मुस्लिम युवक के परिवार वालो की जगह गांव के मुसलमानो ने मारा। साम्प्रदायिक आधार पर इकटठा हाकर मारा। क्याकि मारने वालो मे हिन्दु मुसलमान गांव के सभी लोग शामिल नही थे। यह भी सही है कि मरने वाला मुस्लिम युवक एक गुंडा था, जबकि उसे मारने वाले लडकी के दोनो भाई कोई गुंडे नही थे। शायद इसके बाद भी हिन्दू और मुसलमानो के बीच तार्किक आधार पर इतना फर्क नही दिखता, यदि बैठक से लौट रहे हिन्दुओ को मुसलमानो द्वारा आक्रमण की पहल ना की गइ होती। अब चाहे तो आजम खां अपनी राजनैतिक आत्महत्या कर ले अथवा अन्य मौलाना लोग मुलायम सिंह को अपदस्थ हो कर दे किन्तु जो अंतर मनो मे आ गया है उसे मिटाने की पहल मुसलमानो को ही करनी होगी, जो वे करेंग नही अथवा उनका संगठन करने नहीं देंगा। घटना से स्वाभाविक रूप से अखिलेश सरकार को नुकसान हुआ है। उत्तर प्रदेश मे मुसलमानो का जिस तरह एक पक्षीय मनोबल बढ रहा था, उसे इस घटना से धक्का लगा। फिर भी मुसलमान वास्तविकता को समझने के लिये ना कभी तैयार हुआ है ना भविष्य मे दिखता है। क्योकि मुसलमानो को यह विश्वास है कि भारत मे साम्प्रदायिक आधार पर वे एक मांत्र संगठन है बाकी लोग तो कहीं ना कही विभाजित है। मुसलमानो को यह विश्वास है कि ''फस्ट अटैक इज वेल डिफन्स'' की कहावत उन्हे दुनियां मे हर जगह सफलता दिलातो है। भारत मे भी दिलाएगी ही। और वे नही समझ पा रहे है कि सारी दुनियां मे वे अलग थलग पड रहे है। भारत भी उनमे से एक है।

विचारणोय ये है कि इसका समाधान क्या है। कुंवारी लडकियां के साथ ही छेडछाड की घटनाएं होती है, आकमण होते है बलात्कार होते है, तेजाब फेका जाता है, वह भी प्रायः 12–13 वर्ष से अधिक उम्र की अविवाहित लडकियो के साथ। जब से समाज मे लडकियो का अभाव हुआ है तब से ऐसी घटनाएं और बढो है। इन समस्याओ का समाधान सिर्फ कानून से नही हो सकता क्योकि कानून की अपनी सीमाएं होती है। वह तो सिर्फ 2 प्रतिशत के आस पास ही अपराधो पर नियंत्रण की शक्ति रखता है। यदि कुल आबादी का 10 प्रतिशत अपराध करने लगे तो कानून ऐसे अपराधो का नही रोक सकता। भारत मे तो इतने कानून बना दिये गये कि यदि उन कान्नो का ठीक से पालन हो तो 99 प्रतिशत आबादी को जेलो मे डालना पडेगा। इसलिये बढती छेडछाड की घटनाओ को रोकने के लिये चौतरफा उपाय करने होगे। वैसे तो विवाह जैसे मामलो मे सरकार को काइ कानून बनाना ही नही चाहियें और सारा काम परिवार और समाज पर छाड देना चाहिये किन्तु सरकार को कानून बनाना ज्यादा ही जरूरी लगे तो विवाह की न्यूनतम उम्र 12 वर्ष तय कर देनी चाहिये। किसी भी व्यवस्था में गुण और दोष दोनो होते है। यदि विवाह की उम्र घटेगी तो कुछ आवादी नियंत्रण पर भी असर पडेगा और बाल मृत्यु दर भी बढेगी किन्तु इन सबकी अपेक्षा बलात्कार और छेडछाड को घटनाएं होना ज्यादा नुकसान देह है। दूसरा काम सरकार को यह करना चाहिये कि वैश्यालयों को पूरी तरह खुली छूट दे दे। वैश्यालयो का खुला होना ही ऐसी घटनाओं को रोकने मे सहायक है। तीसरा काम यह भी करना चाहिये कि महिला सशक्तिकरण के प्रयासो को स्वैच्छिक किया जाय न कि प्रोत्साहन के रूप मे। जो महिलाऍ पुरूषो के साथ दूरी घटाना चाहती है उन्हे हल्के फुल्के हंसी मजाक सहन करने की आदत भी डालनी होगी तथा बलात्कार को छोडकर अन्य घटनाओं को तब

तक गंभीरता से नही लेना होगा जब तक ऐसी घटनाए किसी सीमा को पार करने ना लगे। खुले समाज की व्यवस्था को बंद समाज व्यवस्था पर एकाएक थोपना गंभीर समस्यायें पैदा करेगा।
सामाजिक व्यवस्था मे भी कुछ सुधार करने होंगे। महिलाओ का विवाह किसी व्यक्ति से करने की अपेक्षा परिवार से करने की व्यवस्था करनी चाहिये । अर्थात यदि बडे भाइ का विवाह होना है तो छोटा भाई बडे भाई की पत्नो का उपयोग परिवार की अनुमति से कर सकता है जब तक उसका विवाह न हो जाए । यह व्यवस्था आपको बुरी दिखेगी किन्तु कुछ व्यवस्थाऍ कुछ समये बाद अच्छी दिखने लगती है।

साम्प्रदायिक दंगो मे छेड छाड की घटनाओं की अपेक्षा साम्प्रदायिक आधार पर ध्रुवोकरण ज्यादा नुकसान करता है। मुजफ्फर नगर की घटना मे भी यदि उस छेडछाड को घटना को समाज की तरफ से रोकने का प्रयास होता अथवा उन दो लडको की हत्या मे भी किसी एक सम्प्रदाय के लोग शामिल ना होकर गांव के आम लोग शामिल होते तो दंगा ऐसा रूप ना लेता। आवश्यकता तो इस बात की है कि हिन्दू और मुसलमान अलग अलग संगठनो मे होने की अपेक्षा मिश्रित सगठन बनाने का प्रयास करे । मुझे पता चला है कि बरलवी मुसलमान अथवा शिया मुसलमान अथवा सूफी मुसलमान ऐसे साम्प्रदायिक ध्रुवोकरण मे पीछे रहते है, तथा देवबंदी या वहावी आगे रहते है। मुसलमानो को चाहिये कि वे कोई अपनी ऐसी पहचान बनावे जिससे उनकी शान्ति प्रियता के प्रति प्रतिबद्धता का आसानी से पहचाना जा सके। अथवा वे अपना पूजा स्थान अलग कर लें अथवा नाम क साथ कोई शब्द जोड लें या दांढी मूछ मे फर करे लेकिन कोई ना कोई एक सार्वजनिक पहचान तो होनी ही चाहिये कि यह मुसलमान कटटर वादी मुसलमानो के समूह के साथ नही है। संघ परिवार को भी चाहिये कि वह सभी मुसलमानों के साथ एक सा ब्यवहार करना छोड दे। हिन्द् राष्ट का नारा बहुत घातक है। इसी तरह सभी मुसलमान अविश्वसनीय होते है ऐसा विचार करना भी घातक होता ह। संघ परिवार को चाहिये कि वह सत्ता के लालच मे हिन्दू मुसलमान के बीच धवोकरण ना कराये। यदि ऐसा ध्रुवोकरण होगा अर्थात सभी मुसलमानो को एक तरफ मानने की भूल होगी तो ऐसे दंगें होना स्वाभाविक है। यदि दंगे कराने से राजनैतिक लाभ होने लगेगा तो आवश्यक नही है कि छेडछाड की घटनाऐ ही इसका आधार बन सकती है। इसके लिये तो मस्जिद मंदिर की दीवार अथवा धार्मिक झंडें निकालना अथवा अन्य आधार भी हो सकत ह।। धर्म निरपेक्ष हिन्दुओ का भी कर्तब्य है कि वे संघ परिवार को साम्प्रदायिक आधार पर शक्तिशाली ना होने दें तथा धर्म निरपेक्ष मुसलमानो का भी कर्तव्य है कि वे सॉम्प्रदायिक मुसलमानों के हाथो का खिलौना ना बने। यदि ऐसा होगा तो साम्प्रदायिक शक्तियॅा हिन्दू मुसलमान के बीच ध्रुवीकरण नही करा सकेगीं। फिर भी यदि ऐसा महसूस हा कि मुसलमान संगठन के बल पर अपनी शक्ति बढाने को एक हथियार के रूप मे उपयोग करना चाहता है तो लाचारी मे गैर मुस्लिम सभी लोगो का एक जुट होकर गुजरात सरीखी घटनाऐ भी दुहरानी पडे, तो तैयार रहना चाहिये। बार बार दंगे बार बार टकराव के कारण प्रतिदिन के सामाजिक व्यवहार म संदेह और भय के बातावरण की अपेक्षा एक बार मे निपटारा कर लेना कोई बुरी बात नही। लेकिन ऐसा निर्णय सूझ बूझ कर होना चाहिये, सामूहिक होना चाहिए संघ परिवार को निणय की प्रकिया से बाहर निकालकर होना चाहिये, प्रशासन की मौन स्वीकृति से होना चाहिये।

छत्तीसगढ विकास यात्रा

पिछले दिनो छत्तीसगढ के मुख्यमंत्री रमण सिंह जी ने पूरे छत्तीसगढ की एक सघन विकास यात्रा सम्पन्न की। यह यात्रा किसी भी रूप मे ना विकास यात्रा थी, ना कोई अन्य यात्रा। यह यात्रा तो पूरी तरह एक चुनावी यात्रा थी जो ठीक आचार संहिता लगने के पॉच–सात दिन पूर्व पूरी कर दी गई। यात्रा का समापन सरगुजा जिले के अंम्बिकापुर शहर मे संम्पन्न हुआ। यात्रा का समापन जिस मैदान मे हुआ वह मैदान मेरे घर से कुछ ही कदम की दूरी पर है। यात्रा को मैंने तैयारी से लेकर समापन तक स्वयं देखा तथा अनुभव भी किया। भीड की दृष्टि से यात्रा, उम्मीद से कई गुणा अधिक सफल रही। रामानुजगंज जैसे बिल्कुल छोटे शहर मे जहॉ दस हजार लागों की भीड होना असंभव माना जाता है, वहॅा करीब चालीस हजार की भीड का जुटना, एक आश्चर्य ही माना जाता है। समापन के समय अंम्बिकापुर मे दो लाख से अधिक लोगों की उपस्थिति भी आश्चर्य जनक ही दिखी। कई घंटे पहले से सडकों पर सिर्फ पैदल चलने की छूट रखी गई थी। फिर भी चारों ओर से सडकों पर आने वाले आदमी ही आदमी दिखते थे। सडकों पर चलने वालों मे शहरी लॉगो की संख्या कम थी तथा ग्रामोणों की ज्यादा। मैंदान मे भो ग्रामोणों की संख्या अधिक थी। अंम्बिकापुर के अतिरिक्त अन्य छोटे–छोटे शहरों मे भी, इसी प्रकार ग्रामोणों की भीड उमड रही थी। इससे यह स्पष्ट हुआ कि जनता मे नरेन्द्र मोदो के नाम का ऑशिक प्रभाव रहा होगा और रमण सिंह का ज्यादा। वैसे भी रमण सिंह प्रसाशनिक क्षमता से लेकर व्यवहार कुशलता में अन्य राजनेंताओं की अपेक्षा ज्यादा शालीन और कुशल माने जातें हैं। किन्तु सस्ता चावल देकर रमण सिंह ने ग्रामीणों मे एक अलग हो प्रशंसनीय छवि बना ली है। इस वर्ष के चुनावी मौसम मे उन्होनें 270 रू. प्रति क्विंटल धान की खरीदी पर बोनस देकर भी बहुत ख्याति अर्जित की। भ्रष्टाचार के मामलें मे भी उनका स्तर राष्ट्रीय औसत से कम रहा है। यदि भीड को पैमाना माना जाए तो रमण सिंह ने तीन माह मे संम्पन्न हो रहे विधानसभा चुनावों मे स्पष्ट बढत ले ली है। इस यात्रा में रमण सिंह के साथ उनका लडका भी साथ–साथ था। ऐसा लगा कि रमण सिंह उसे टे्निंग दे रहे हैं। किन्तु जिस तरह रमण सिंह जी के लडके के साथ रायपुर का एक कॉग्रेसी भू–माफिया हर जगह छाया की तरह साथ–साथ रहा, वह कुछ शंकाओं को भो जन्म देता है। कहीं उस लडके की शराफत अपने पिता के नाम पर धब्बा ना बन जाए।
यह बात भी स्पष्ट है कि उक्त यात्रा पर सरकारी धन पानी की तरह बहा। भीड को लाने मे सरकारो साधन तो लगे ही, किन्तु प्रशासनिक बल का भी भरपूर उपयोग किया गया। सारा आवागमन रोककर चलने वाली ट्क या बसें प्रशासनिक स्तर पर भीड को लाने के कामों मे भेज दिये गये। वैसे तो जोगी जी के कार्यकाल मे भी ऐसा होता था, तथा अन्य जगहों मे भी ऐसा होता होगा। परंतु छत्तीसगढ के सरकारी कर्मचारियों ने भोड जुटाने मे जिस ईमानदारी से प्रयत्न किया वह स्पष्ट करता है कि छत्तीसगढ के शासकीय कर्मचारियों को डॉ. रमण सिंह के तीसरी बार मुख्यमंत्री बनने का विश्वास हो चला है। कॉगस के शासन काल मे भीड जुटाने मे सरकारी साधनों के उपयोग की आलोचना भी होती थी। किन्तु रमण सिंह की इस विकास यात्रा मे ऐसी किसी भी आलोचना या विरोध का कही कोई स्वर नही सुनाई दिया। विपक्ष की कॉगस पार्टी की यदि काई चर्चा होती है तो उसका तीन चौथाई हिस्सा अजीत जोगी से हाने वाले टकराव से ही भरा रहता है। छत्तीसगढ की राजनीति में कभी ऐसे टकराव की चर्चा भाजपा मे नही दिखी और ना है। यदि किसी टकराव की आशंका दिखती है तो रमण सिंह अपनी सूझबूझ से इस टकराव को टाल देते है। अब तो छत्तीसगढ मे आम आदमी यह बात मानने लगा है कि अजीत जोगी जब तक कॉगस मे है, तब तक रमण सिंह को कोई खतरा नही है। क्योंकि छत्तीसगढ के सवर्णो मे राजनैतिक

भेदभाव भूलकर अजीत जागी के प्रति एक गंभीर घृणा का भाव है तथा आदिवासियों मे अब तक सवर्णो क प्रति किसी तरह का कोई ध्रुवीकरण नही हो पाया है।

सरगुजा जिला और बस्तर जिला दोनो ही नक्सलवादी क्षेत्र है। बस्तर जिले से यात्रा आती–आती सरगुजा जिलें मे सम्पन्न हुई। दोनो के बीच लगभग आठ सौ किमी. की दूरी है तथा दोनो के बीच आपस मे कोई नक्सलवादी जुडाव नही है। बस्तर– ऑध्र, महाराष्ट् का सीमावर्ती क्षेत्र है, तो सरगुजा–झारखण्ड और उत्तरप्रदेश का। दोनो क्षेत्रों मे एक अन्य भिन्नता भी है कि बस्तर में नक्सलवाद लगातार बढ रहा है, और बढते–बढत वह राष्ट्रीय स्तर पर सर्वोच्च स्थान पा चुका है। दूसरी ओर सरगुजा में नक्सलवाद घट रहा है और घटत–घटते अब तो उसके अंतिम अवशेष ही बचते दिखते है। यह भी सम्भव है कि रमण सिंह जी ने सरगुजा जिलें में यात्रा को समाप्त करके देश को यह संदेश देने की कोशिश की हो, कि किसी नक्सलवादी क्षेत्र में भी रमण सिह ऐसी सफल सभाएँ कर सकता है। उद्देश्य चाहे जो भी हो किन्तु यात्रा और उसके समापन की सफल समाप्ति ऐसा आभाष तो कराती ही है। सभा स्थल पर एक लालकिला जैसी आकृति का भव्य पंडाल बनाया गया था। मोडिया मे भी यह संदेश दिया गया कि वह सभा स्थल लालकिले का छाया चित्र है, जहॉ चुनावों के पूर्व ही नरेन्द्र मोदी खडे होकर छाया प्रधानमंत्री के रूप मे अपना भाषण दिये। रमण सिंह के पूरे भाषण म विकास की बातें थीं, गंभीरता थी तो नरेन्द्र मोदी के पूरे भाषण में केन्द्र सरकार की आलोचना के चुटीले व्यंग्य। यदि कोई व्यक्ति कभी मनमोहन सिंह और नरेन्द्र मोदी का भाषण एक साथ सुन लें, तो समान्यतया मनमोहन सिंह के प्रति श्रद्धा का भाव प्रगट होता है और नरेन्द्र मोदी के प्रति छिछोरापन का। अंम्बिकापुर मे भी रमण सिंह और नरेन्द्र मोदी के बीच यह अंतर साफ दिखा। जैसे मोदी जी के भाषण मे लोगो ने कई बार तालियॉ बजा–बजाकर उसका आनंद लिया। मोदी जी ने कहा कि भारत की संसद कोल घोटाले से जुडी गायब फाइलों की बहुत चिंता कर रही है, भारत की जनता तो इस बात से चिंतित है कि मनमोहन सिंह के नेतृत्व में हमारी भारत सरकार ही कई वर्षों से कहीं गायब हो गई है। ऐसी कई अन्य अनेक बातें कही गई जो किसी संभावित प्रधानमंत्री के लिए कोई शालोन भाषा नही मानी जाती। यह बात सच है कि छत्तीसगढ मे अन्य प्रदेशों की अपेक्षा आय के साधन भी अधिक है और भ्रष्टाचार भी कम नही है, किन्तु रमण सिंह जी के कुशल संचालन से दुरूपयोग होते हुए भी, धन का सदुपयोग होता है, जबकि पडोसी राज्य झारखण्ड की स्थिति इसके ठीक विपरीत है। रमण सिंह जी की इस यात्रा से मुझे भी यह विश्वास हो चला है, कि रमण सिंह जी अगामी विधानसभा चुनाव आसानी से जीत जाऍगें। आज का वातावरण तो यही स्पष्ट करता है।

1 राजनंदनी नवले, हेडगेवार कालोनी, सॉची जिला रायसेन मध्यप्रदेश ?

प्रश्न–देश मे जागृति लाने के पूव हमे अपने अधिकारो की जानकारी होना अति आवश्यक है। आप अपने अधिकारो का उचित उपयोग करे। आप अपने अधिकारो का अनुसरण कीजिय, तो देश का उद्धार अपने आप हो जावेगा। आपकी संस्था मे जितने व्यक्ति कार्यरत है। उन्हे ही इन अधिकारो के महत्व को समझाने मे लगाइये। यदि इन अधिकारो को हमारी देश की जनता समझ ले तो देश मे जो बुराईया है वे अपने आप समाप्त हो जावेंगी। हमारा उददेश्य देश की जनता को भडकाना नही, सिर्फ अधिकारों का बोध कराना है।

उ0–आपने देश के नागरिकों को अपने अधिकारो की जानकारी होने का बहुत महत्व दिया है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति को व्यक्ति के रूप मे तो समाज मे रहना है तथा नागरिक के रूप मे देश मे। प्रत्येक व्यक्ति की दुहरी भूमिका होती है। प्रत्येक व्यक्ति को समाज से भी मौलिक अधिकार प्राप्त है तथा राज्य से भी। ये अधिकार अधिकार के रूप मे उसकी अन्तिम सीमा भी है। इसके बाद समाज मे उसे कोई स्वतंत्र अधिकार प्राप्त नही होता। उसे तो सिर्फ कर्तव्य ही करना है। राज्य द्वारा अपने नागरिको को मूल अधिकार के अतिरिक्त जो भी अधिकार दिये जाते हैं वे राज्य के द्वारा स्वैच्छिक रूप से दिये जाते है तथा राज्य इन्हे कभी भी वापस ले सकता है तथा लेता भी रहता है। प्रत्येक व्यक्ति को राज्य तथा समाज द्वारा जो मूल अधिकार दिये गये है वे अपरिर्वतनशील होते है। आवश्यकता यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को इन मूल अधिकारो की जानकारी कराई जाय। तथा इसके बाद प्रत्येक व्यक्ति को यह बताया जाय की उसक कर्तब्य क्या है। राज्य द्वारा दिये अधिकारो की जानकारी कराना कोई बुरी बात नही है किन्तु बहुत आवश्यक भी नही है कि हम और काम छोड कर नागरिको को ऐसे परिर्वतनशील अधिकारो की जानकारी कराते रहें। आज अधिकारो की जानकारी की अपेक्षा कर्तव्य की जानकारी का ना होना अधिक संकट बना हुआ है। फिर भी यदि कोई व्यक्ति समाज मे अधिकारो की जानकारी भी कराता है तो उसे रोकना ठीक नही। फिर भी मेरे जैसे व्यक्ति को इस काम मे ज्यादा सकियता नही दिखानी चाहिए।

2ः महावीर त्यागी : हरियाणा प्रदेश–सर्वोदय मंडल। पट्टी कल्याणा पानीपत, हरियाणा।

सुझावः ''ज्ञान तत्व'' का 270 नं0 का अंक जो जुलाई 2013 के प्रथम पखवाड़े अर्थात् 1 से 15 जुलाई 2013 का है मेरे हाथ में है। लोकतंत्र के तीन मुख्य स्तम्भ, विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका है। इन तीनों का पूरी तरह स्वस्थ्य और मजबूत होना अति आवश्यक है। ये तीनों अपनी मर्यादाओं में रहकर एक दूसरे के पूरक बनकर देश और समाज को आगे बढ़ाने का रचनात्मक कार्य कर सकते हैं। साथ ही उल्टी दिशा मे चल कर समाज और देश का अहित भी बहुत अधिक कर सकते हैं।

इन तीनों संगठनों पर टिप्पणी करने का हक लोक तंत्र में सब को मिला है। परन्तु एक सीमा में रहकर। रोज रोज के घोटाले, इन में लिप्त राजनेता और अफसर शाही से जनता तंग आ चुकी है अतः विधायिका और कार्यपालिका पर से लोगों का भरोसा उठता जा रहा है। परन्तु इनका जाल इतना मजबूत है कि उस से निकल पाना असम्भव सा लगने लगा है। न्यायपालिका पर अभी भी लोग भरोसा करते हैं। ईश्वर करे यह भरोसा कायम रहे और अधिक मजबूत हो।

लोकतंत्र का मजबूत होना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है। इस के लिये जागरूक और बुद्धिमान लोगों का होना बहुत आवश्यक है। सभी रचनात्मक संगठनों को एक जुट होकर लोक जागरण और लोक प्रशिक्षण का कार्य शुरू कर देना चाहिये। प्रशिक्षित लोग और त्यागी लोग ही इस कार्य को कर सकते हैं। आप की राय आनी चाहिये।

आपका बिना तारीख और बिना पत्रांक का आमंत्रण पत्र मिला, धन्यवाद। व्यवस्था परिवर्तन मंच तथा लोक स्वराज्य मंच जो लोक स्वराज्य की यात्रा की योजना बना रहे हैं और उस यामी दल को आपका अनुभव पूर्ण सहयोग मिलेगा, उसका शुभ परिणाम आना चाहिये, आयेगा। हरियाणा से हम दो लोग तैयारी सभा में 30 व 31 अगस्त को नोएडा में रहेंगे।

उत्तरः यह सही है कि, वर्तमान समय मे लाकतंत्र ही एक मार्ग दिखता है। तानाशाही को लोकतंत्र की दिशा मे बदलना उचित कदम है। साम्यवादी देशो मे तानाशाही लगातार लोकतंत्र मे बदल रही है। मुस्लिम देशो मे तानाशाही को लोकतंत्र मे बदलने के लिए हिंसा का मार्ग अपनाना पड रहा है। भारत जैसे दक्षिण एशियाई दश स्वतः ही लोकतांत्रिक है। लोकतंत्र भी दो प्रकार का है–एक जहॉ जीवन पद्धति मे लोकतंत्र है और दूसरा जहॉ जीवन पद्धति तानाशाही की अभ्यस्त है, तथा शासन पद्धति मे लोकतंत्र आ गया है। पश्चिम के लोकतांत्रिक देशों मे जीवन पद्धति मे लोकतंत्र है। साम्यवाद से लोकतंत्र की आर बढ रहे देशों मे भी ऑशिक रूप से जीवन पद्धति का लोकतंत्र है। किंतु दक्षिण एशिया के देश अथवा मुस्लिम देशो मे लोकतंत्र जीवन पद्धति में नही आया। सिर्फ शासन पद्धति तक आकर रूक गया। भारत भी दूसरे प्रकार के देशो मे ही है। यहॉ आजादी के 65 वर्षो के बाद भी पुराने राजाओं को आज भी बहुत सम्मान प्राप्त है। यहॉ चुनावों के पूर्व व्यक्ति की छवि निर्मित की जाती है। यहॉ नोतियों को महत्व ना देकर व्यक्तियों को महत्व दिया जाता है। पिछले दस वर्षो से स्पष्ट दिख रहा है कि मनमोहन सिंह लोकतांत्रिक तरीके से नोतियों को महत्व दे रहें हैं। दूसरी ओर नरेन्द्र मोदी कहीं भी किसी भी तरह सिस्टम को ना मानतें हैं ना चलतें हैं ना मजबूत होने देते हैं। फिर भी नरेंन्द्र मोदी मनमोहन सिंह जी से ज्यादा प्रसिद्ध हैं। पंडित नेहरू भी सिस्टम को कमजोर करके स्वयं को मजबूत करते रहे। आज पंडित नेहरू को अच्छा माननें वालो की संख्या अधिक है और मनमोहन सिंह के लिए नगण्य। विधायिका ने मनमोहन सिंह के पूर्व तक न्यायपालिका को दबाकर रखा है। कार्यपालिका को भी प्रारंभ मे दबाया गया तथा बाद मे कार्यपालिका स्वयं विधायिका के साथ सहयोग करने लगी। मनमोहन सिंह के कार्यकाल मे लगातार न्यायपालिका भी मजबूत हुई तथा कार्यपालिका भी। स्पष्ट है कि पंडित नेहरू, इंदिरा गॉधी अथवा नरेंन्द्र मोदी सरीखे लोग मनमोहन सिंह जी के जगह बैठे होते तो न्यायपालिका अथवा कार्यपालिका केंन्द्र मे भी इतना मजबूत नहीं हो पाते जितना आज है। न्यायपालिका को इस बात का आभार प्रगट करना चाहिए कि मनमोहन सिंह ने उसे मजबूत हाने दिया। किंतु न्यायपालिका ने कभी ऐसा मार्ग नही पकडा और उसने भी अपने सशक्तिकरण को मनमोहन सिंह जी की कमजोरी के रूप में उपयोग किया। विधायिका पर आम लोंगो का विश्वास नही के बराबर है। कार्यपालिका पर भी सामान्य से कम विश्वास है और न्यायपालिका पर सामान्य से ज्यादा विश्वास अब भी बना हुआ है। किंतु न्यायपालिका ने जिस तरह विधायिका के कार्यो मे अनावश्यक हस्तक्षेप करना शुरू किया उससे विधायिका की प्रतिष्ठा गिरी। यदि उत्तराखंण्ड मे विधायिका और कार्यपालिका की असफलता की निगरानी न्यायपालिका करने लगेगी तो स्वभाविक है कि उसमें होने वाली गडबडियों की बदनामी भी न्यायपालिका को झेलनी पडेगी। दिल्ली मे प्याज का मूल्य क्या हो ? यह तय करना या इसमें दखल देना, न्यायपालिका का काम नही। यदि न्यायपालिका इन कार्यो में ज्यादा हस्तक्षेप करेगी तो हर आदमी की अपेक्षाऍ भी न्यायपालिका से बढती जाएंगी तथा विधायिका की बदनामी न्यायपालिका के तरफ मुडती जाएगी। अच्छा होता कि न्यायपालिका अपने को तानाशाह समझने की भूल नहीं करती।

लोकतंत्र कोई अंतिम व्यवस्था नही है। लोकतंत्र को शासन पद्धति से नीचे आकर जीवन पद्धति तक उतरना चाहिए। जिसका अर्थ है लोक–स्वराज्य अथवा सहभागी लोकतंत्र अथवा लोक नियुक्त की जगह लोक नियंत्रित तंत्र कहें। अच्छा होगा यदि हम वर्तमान भारत की वर्तमान लोकतांत्रिक प्रणाली को लोक–स्वराज्य को दिशा देने के लिए, जनमत जागरण शुरू करें। इस सबंध मे मेरा तथा हमारे सभी साथियों का आपको पूरा सहयोग मिलेगा।

3 आचार्य पंकज जी

विचार–ज्ञान तत्व 273 पृष्ठ 20 में श्री पी एन मेन्डोला के गंभीर प्रश्न पर बडे ही हल्के ढंग से समाधान देने का आप ने प्रयास किया है। वर्तमान लोकतंत्र ही पूॅजीवाद का गर्भगृह है। आप लिख रहे है कि लोकतंत्र पूॅजीवाद अलग अलग विचार है जो एक साथ जुडकर साथ काम करते है। मेरा विचार है कि पृथक पृथक विचार कभी भी एक साथ नही जुड सकते। मुण्डे–मुण्डे मतिर्भिन्ना यह शाश्वत सत्य है। आपने सत्य का उदाहरण करते हुए लिख भी दिया है कि लोकतंत्र होगा तो पूॅजी का सरकारी करण संभव नही है। तानाशाही प्रथमतः पूॅजी का सरकारी करण करती है। इसपर भी आप दुविधा में है। मार्क्स का विचार असफल नही है। साम्यवादी सरकारे असफल होती है। विचार के सत्यता की कसौटी व्यवहार है। विचार, विज्ञान और तर्क की आवश्यकता श्रृष्टि के अनादि से है। गॉधी का द्रष्टिशीप पूॅजी के संयोजन का व्यवस्थित समाधान है। गॉधी व्यक्तिगत पूॅजी विस्तार के स्पीड ब्रेकर है। गॉधीवादियो ने इसे नेपथ्य में डाल दिया है। वैसे आप का उत्तर समाधान कारक है कुछ विन्दुओं को छोडकर । क्षमा करेंगे।

आज ही ज्ञान तत्व अंक 274 मिला जिसे स्वभावानुसार पूरा पढ गया। पृष्ठ संख्या 13से 14 पर श्री सुनील तामगाडगे नागपुर का प्रकाशित पत्र पढा आप ने बडी विनम्रता से उत्तर दिया है जैसा कि आप का लेखकीय स्वभाव है। ब्राहमण वृत्ति है जाति नही हैं। इसी लिए आदरणीय बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर ने वृत्ति से ब्राहमणी सविता से विवाह किया था, यह तो जगजाहिर है। आर्यो के विषय में दयानंद गॉधी तथा अम्बेडकर का उदाहरण कदापि निर्णायक नही हो सकता। प्रसिद्ध मार्क्सवादी समीक्षक स्व0 डा0 रामविलास शर्मा की दिल्ली विश्वविघालय से प्रकाशित पुस्तक पश्चिम एशिया और ऋगवेद प्रमाणित करता है कि आर्य भारत के मूल निवासी है। अम्बेडकर के समकालीन डा0 सम्पूर्णानंद की प्रसिद्ध पुस्तक आर्योका आदि देश विस्तार से प्रमाणित करता है कि आर्य आर्यावर्त भारत के ही मूल निवासी है। मोहन जोदडो हडप्पा की खुदाई से प्राप्त वस्तुए भी आर्यो की जोवन पद्धति के साक्षात प्रमाण है। इससे स्पष्ट है कि भारत के भूभाग पर ही नही भारत के पाताल गर्भ में भी आर्यो का मूल स्थित है। कोई भी धुमक्कड जाति ऋगवेद जैसी रचना नही कर सकती ।

आर्य आक्रमण मिथक एवं सच्चाई केवल साहित्यिक स्रोत पर ही निर्भर रहना पर्याप्त नही होता। हडप्पा सभ्यता और आर्य संस्कृति में कई तरह के मेल है। कोई भी पुरातात्विक आर्योके बाहर से आने को सिद्ध नही करता। यहॉ तक की अस्थि अनुसंधान से भी सिद्ध हो चुका है कि पंजाब और गुजरात के लोगो और हडप्पा सभ्यता में पायी गयी अग्निवेदियॉ भी आर्य संस्कृति से मेल खाती है। हडप्पा सभ्यता के कई स्थानो पर गाय बैल और धोडे के अवशेष पाये गये। यहॉ तक कि हडप्पा सें मिली मुहर भी आर्य संसकृति से मिलती है। बराह और स्वास्तिक के प्रतोक भी आर्य साहित्य में उपलब्ध है। इसप्रकार हडप्पा सभ्यता और आर्य संस्कृति में कई अदभुत समानताएॅ है। जनसांख्यिकी की वर्तमान अनुसंधानों पर भी यह तथ्य संभव नही लगता कि उस समय लगभग ढाई करोड आबादी कुछ मुट्ठो भर आर्य हमलावरो द्वारा नष्ट कर दी गयी होगी। हडप्पा सभ्यता का अंत या तो सरस्वती नदी के सूखने से या फिर जलवायु में हुए किसी आकस्मिक परिर्वतन सें हुआ जान पडता है। हडप्पा सभ्यता और आर्य संस्कृति में परस्पर कारण संबंध प्रत्यक्ष है क्योंकि धुमक्कड इतने विस्तृत साहित्य का निर्माण नही कर सकते थें। इतिहास के एक समग्र और अखण्ड स्वरूप को समझने के लिए इन दोनो को समझने के लिए इन दोनो पहलुओ के सामंजस्य को दखना होगा । बौद्धायन के स्रोत सत्र से हडप्पा सभ्यता और आर्य संस्कृति संभवतः ईरान और फांस तक फैली थी। आर्यो ने भारत में उत्तर पश्चिम से प्रवेश किया यह कल्पना ऐतिहासिक भाषा विज्ञान की है पूरातत्व ने (मार्शल से व्हीलर तक) उसे वहॉ से ग्रहण किया, कल्पना निराधार है।

अब मेरी खुली चनौती है कि श्री सुनोल तामगाडगें जैसे तमाम लोग जहॉ चाहे वहॉ आमने सामने बैठकर प्रामाणिक प्रागैतिहासिक संस्कृत पाली प्राकृत ब्राहमी शौरसेनी तथा पुरातात्विक प्रसिद्ध विद्वानो के समक्ष वाद विवाद सविधा जनक ढंग से कर सकते है। पूरे विश्व को आवाज स्फोट अक्षर प्रदान करने वाले (आचार्य पाणिनी) संघोषमहाप्राण ध्वनियो वाले भारतीय शब्दो के इरानी यूरोपियन प्रतिरूपो में सघोषता और महाप्राणता का संयोग नही होता यह विशेषता केवल भारतीय आर्य भाषाओ की है। यह एक तथ्य भारत पर आर्यो के आक्रमण सिद्धात को ध्वस्त करने के लिए काफी है।

" भेद दृष्टि अविघेयम ऋगवेद
भेद अन्तर दृष्टि मूर्खता है। "

उत्तर–आपने जो विस्तृत उत्तर दिया है। वह मेरी जानकारी से बहुत अधिक है । मै इतना नही जानता था इसलिये मैने अपनी सीमा मे रहकर उत्तर दिया। अब आपका उत्तर तामगाडगे जी को मिलेगा और उनका जो उत्तर आयेगा वह आपको भेजने का प्रयत्न करेंगे।

4 इन्द्रदेव गुलाटी टीचर्स कालोनी बुलंदशहर उत्तर प्रदेश

विचार–(1) स्वतंत्रता के बाद वीर सावरकर ने तथाकथित परम पूज्यनीय गुरू गोलवलकर से बोलना बन्द कर दिया था।
(2) 1881–1941 में हिन्दू का प्रतिशत 80 से घटकर 74 हो गया।
(3) 1947–2013 में हिन्दू का प्रतिशत 88 से कम होकर 81 रह गया है।
(4) देश में चीन की तरह अनिवार्य परिवार नियोजन की प्रबल आवश्यकता है।
(5) यदि तुष्टीकरणवादी–धर्मनिरपेक्ष–गांधीवादी पार्टियों का शासन लगातार चलता रहा तो भविष्य में हिन्दू का प्रतिशत 50 से कम भी हो सकता है और सत्ता ''मुस्लिम–ईसाई'' के हाथों में जा सकती है।
(6) केरल में ईसाई 19 प्रतिशत है और मुस्लिम 24 प्रतिशत हैं जबकि मुख्यमंत्री ईसाई बन गया है और राज्य के प्रमुख मंत्रालयों के मंत्री ईसाई–मुस्लिम बन गए हैं। शेष कम महत्व के 9 मंत्रालय हिन्दुओं को दिए गए हैं।
(7) हिन्दू युवकों–युवतियों से अनुरोध है कि वे अपने परिवारों का आकार बडा या मध्यम रखने की मानसिकता रखें।
(8) कडे संघर्ष के बाद 906 वर्षों के पश्चात् प्राचीन राष्ट्र 1947 में स्वतंत्र हुआ जिसे विभाजन के बाद स्वाभाविक रूप से हिन्दू राष्ट्र घोषित किया जा सकता था और सरकारी स्तर पर हिन्दू के आंसू पोंछे जा सकते थे।
(9) परतन्त्रता काल में 30 32 छोटे–बड़े मन्दिर भ्रष्ट किए गए थे जिसे भारत की हिन्दू सरकार जीर्णोद्धार कराके हिन्दू समाज को सौंपती। पूरे देश में गौवध बन्दी व शराब बन्दी लागू होती।
(10) 65 वर्षो में हिन्दू की दुर्गति हुई है। दंगों में वह पिटता है, मार खाता है क्योंकि वह स्वभाव से बचावकारी है। उसका प्रतिशत 88 से घटकर 81 रह गया है।

उत्तर–आपने हिन्दुओ की धटती संख्या पर विस्तार से जानकारी भेजी है उससे मैं सहमत हूॅ। भारत में मुसलमानो की संख्या भी बढती रही है तथा इसाईयो की भी। भारत में मुसलमानों का मनोबल भी बढा हुआ है । विचारणीय ये है कि इसका कारण क्या है ? तथा समाधान क्या है? मेरे विचार से भारत में हिन्दुओं की समस्याओं का कारण या तो आप जैसे लोग है या संघ परिवार । दुनिया जानती है कि हिन्दू कभी धर्म के नाम पर संगठित नही हो सकता । 50 वर्षो में हिन्दुओ को संगठित करने के आप ने भी बहत प्रयत्न कियें संघ परिवार नें भो किये तथा शिवसेना नें भी किन्तु हिन्द कभी संगठित नही हुए। ऐसी स्थिति में यह असंभव प्रयत्न लगातार करते जाना कहॉ तक उचित है यह तो आप लोग ही बता सकते है। कही ऐसा तो नही कि आप लोग हिन्दू संगठन के नाम पर किसी राजनैतिक उद्देश्य की पूति में लगें हो अन्यथा अब तक के अनुभवो को देखकर आप को अपनी राजनीति में बदलाव करना था। यदि आप धर्म निरपेक्षता तथा सांप्रदायिकता के बोच टकराव करते तो स्वाभाविक है कि मुसलमान प्रत्यक्ष रूप से अधिक सांप्रदायिक होने के कारण इसमें पिछड जाता। ईसाइ भी इस मामलें में हिन्दुओ का मुकाबला नही कर पाते। किंतु आपने भी इस दिशा में सोचने की आवश्यकता ही नही समझी। आज आप हिन्दू राष्ट्र का घिसा पिटा नारा लगातें रहते है जिसे बहुसंख्यक हिन्दू कई बार ठुकरा चुका है तथा आज भी ठुकराने को तैयार खडा है । एक मार्ग और था जो इस मार्ग से थोडा कठिन है किन्तु सर्वश्रेष्ठ मार्ग है।

यदि धर्म निरपेक्ष तथा सांप्रदायिक के बोच ध्रुवोकरण ना कराकर शराफत तथा अपराधीकरण के बोच कराया जाता तो और भी अधिक अच्छा होता। वैसे सामान्य रूप से सांप्रदायिकता को छोडकर अन्य मामला के आपराधिक मामलो में हिन्द मुसलमान तथा ईसाइयों का प्रतिशत लगभग आबादी के बराबर ही है। किन्तु स्वतंत्रता के बाद भारत में समझदारी का प्रतिशत तो घटकर लगभग शून्य हो गया है। शराफत का प्रतिशत भी लगातार घटता ही जा रहा है। न्यायालय में अथवा सरकारी कार्यालयो में सच बोलने वालो का नाम खोजना ही व्यर्थ है किन्तु समाज में भी अब सच बोलने वाले या ईमानदार लोगो का प्रतिशत बहुत तेजी से घट रहा है। हिन्दुओ का प्रतिशत यदि घटकर 88 से 81 हुआ है तो इमानदार या सत्य बोलने वालो का प्रतिशत तो कई गुणा तक घट गया है। मैं नही समझा कि आप को हिन्दुओ की जितनी चिंता हुई उससें अधिक शराफत की चिंता क्यो नही हुई । मैंने लिखा है कि हिन्दुओ की घटती संख्या का कारण या तो आप लोग है या संघ परिवार । मैं जानता हू कि यह बात आप लोगो को बुरी लगेंगी लेंकिन जिसे मै सच समझता हूँ उसें अपनो के बोच कहना बुरी बात नही समझता। सबसे पहले भूल यह हो रही है कि आप जैसे लोगो ने कभी गॉधी हत्या की खुलकर ईमानदारी से निंदा नही की जब कि वह कार्य पूरी तरह निंदनीय था। दूसरी भूल यह हो रही है कि आप लोग हिन्दुत्व के नाम पर राजनैतिक रोटी सकने का कार्य कर रहें है। स्पष्ट दिखता है कि मुसलमान पूरी तरह संगठित है किन्तु राजनीति से दूर रहकर सभी दलो को अपनी ओर आकर्षित किये रहता है। यहॉ तक कि आप भी खुलकर उनकी आलोचना नही कर सकते जब कि सभी दल हिन्दू मुसलमान का सवाल आने पर मुसलमानो के पक्ष में झुक जाते है और आप हिन्दुओ के पक्ष में खडे होकर अलग थलग पड जाते है । स्वतंत्रता के तत्काल बाद कांग्रेस पार्टी हिन्दुओ और मुसलमानो के बोच में लगभग तटस्थ थी। मुझे याद है कि इसाई धर्मान्तरण के विरूद्ध कांग्रेस पार्टी की सरकार ने ही नियोगी कमीशन बिठाया तथा धर्म परिर्वतन पर रोक का कानून बनाया था। राजीव गॉधी ने भी थोडा तटस्थ हाने का प्रयास किया था। मोरार जी देसाई जा आप के साथ सरकार चला रहे थे उनको भी आपने ठीक से नही चलने दिया। नरसिंह राव पूरी ईमानदारी से अयोध्या मंदिर के संदर्भ में न्याय संगत निर्णय लेने के पक्षधर थे किन्तु आप की नजर कही और थी। ऐसा लगता है जैसे कि आप हिन्दुओ की किसी समस्या का समाधान किसी और के माध्यम से होते हुए नही देखना चाहते थे।क्योकि समस्या का समाधान हो जाना आपकी राजनैतिक महत्वाकांक्षा को नुकसान पहुचा सकता था। अब यदि आप की कमजोरी का मुसलमान और ईसाइ लाभ उठावे तो इसमें नुकसान हिन्दुओ का हो रहा है किन्तु कोई और मार्ग भी नही दिखता क्योंकि जब तक हिन्दू अल्पसंख्यक नही हो जाएगा तब तक आप अपनी राजनैतिक रोटी सेकने से मानेगे नही, और हिन्दु कभी आप को इस तरह साफ साफ नही नकार पायेगें कि आप स्पष्ट रूप से अलग थलग पड जाए। अच्छा हो कि आप हिन्दुओ का पोछा छोड दें। हिन्दू मुसलमानो और ईसाइयों से वैचारिक धरातल पर दो दो हाथ करने में सफल हो जाए। आप ने लिखा है कि वीर सावरकर माननीय गरू गोलवलकर जी के खिलाफ हो गये थे और उन्होने उनसे बोलना बंद कर दिया। उग्रवादी या आतंकवादी संगठन में ऐसे टकराव होना कोई नई बात नही है। ऐसे टकराव तो नक्सलवादियो में सुनन को मिलते है जब नक्सलवादियो को करतूतो से दुखी होकर उसके संस्थापक कानू सान्याल आत्महत्या करते है अथवा अनेक मुस्लिम आतंकवादी भी एक दूसरे की हत्या कर देतें है । वर्तमान समय में सउदी अरब, सीरिया के प्रधान के खून का प्यासा बना है और अमेरिका के साथ मिल कर उसपर आक्रमण करना चाहता है तो यदि सावरकर ने गोलवरकर जी से बोलना बंद कर दिया था तो यह काई अभूतपूर्व बात नही है।

5 सत्यदेव गुप्त सत्य रूदौली जिला फैजाबाद

विचार—मैने सात आठ महीना पूर्व आपसे निवेदन किया था कि फ्री मे भी ''ज्ञानतत्व'' पढने से इंकार करन वालों को पत्रिका भेजना बंद कर दें। हमारे क्षेत्र मे मात्र दो लोगो ने सौ—सौ रू. दिये थे 1. कैलाश नारायण तिवारी (अरविंद पुस्तकालय) और श्री विन्ध्यवासिनी मिश्र (रूदौली)। इधर दो मास से किन्ही कारण से मेरा ज्ञानतत्व नहीं मिल रहा हैं, जबकि 272 वॉ अॅक फिर मिला है। इस अॅक मे कुछ पठनीय और विषेश विचारणीय सामग्री है। पृष्ठ 10 पर ''भारत को स्वतंत्रता'' क्रान्तिकारियों के मार्ग से मिली या अहिंसक मार्ग से। यह बहस अनावश्यक है ? प्रश्न है कि क्यों अनावश्यक है ? सुभाष बाबू का जापान से साठ हजार भारतीय सैनिक मॉग कर असम पर आक्रमण करना गलत था। आजाद हिंद फौज का गठन अंगेजों से युद्ध करने के लिए ही किया गया था। इसमें हार—जीत मरने की चिंता करने का प्रश्न ही नही उठता है। यदि यह गलत था तो गॉधी जी का सुभाष को समर्थन ना देना क्या परोक्ष रूप से अंग्रेजों का समर्थन करना नही है ? आपके मतानुसार इस युद्ध मे 55 हजार भारतीय सैनिक शहीद करवा दिये गए, जो गलत था। परंतु गॉधी—नेहरू के नेतृत्व में (इस अहिंसक युद्ध मे) तो भारत के टुकडे—टुकडे हो गये, ओर सरकारी ऑकडा अनुसार ''सात लाख'' भारतीयों का कत्ल हुआ था, यह कितना उचित था ? गॉधी का यह कथन कि ''मेरी'' लाश पर ही पाकिस्तान का निर्माण संभव है। उसके पश्चात भी देश बॅटा और पाकिस्तान बन गया, और बात—बात में अनशन करने वाले गॉधी का मौन रहना, कितना उचित था ? यदि आजाद हिंद फौज को सफलता मिल जाती तो, क्या तब भी देश खंडित होता, क्या तब भी जन—धन की इतनी ही हानि हुई होती ? पृष्ठ सात पर— आपके मतानुसार भारत में ''हिन्दु बहुमत'' मे है। यह कितना भ्रामक सत्य है ? कॉग्रेंसी, वामपंथी, कम्युनिष्ट आदि सब अपने को धर्म निरपेक्ष (गैर हिन्दु) कहतें हैं। जब कि इन्ही पार्टियों के लोग अपने को मुस्लिम, इसाई, सिक्ख बौद्ध कहने में परहेज नही करतें हैं। मुस्लिम, मुसलमान रहते हुए धर्मनिरपेक्ष हो सकता है परंतु अपने को हिन्दु कहने पर वह सॉम्प्रदायिक हो जाता है, हर धर्म के

लोग सेक्युलर कहला सकतें हैं, किन्तु हिन्दु कभी सेक्युलर नही माना जा सकता। यदि इसी आधार पर जन–गणना कराई जाए तो हिन्दु ही अल्पसंख्यक ही निकलेगा।

ज्ञानतत्व 1–15 अगस्त पृष्ठ (11) पर दसवीं पंक्ति ''संघ परिवार'' का दुहरा चरित्र स्वयं हिंसा नही करते किंतु दूसरों को हिंसा करने के लिए प्रोत्साहित करते रहतें हैं। इस पर इंदिरा जी की याद आ गई, जब पूर्वी पाकिस्तान मे जनरल नियाजी ने युद्ध छेडा और भुट्टो ने चौदह सौ वर्षों तक भारत से युद्ध करने की धमकी दी थी। तब चौदह दिन में ही इंदिरा जी ने पूरब को पश्चिम से जुदा कर दिया था, और संघी अटलजी ने इंदिरा को दुर्गा का अवतार बताया था। इससे आपको बात सिद्ध हो जाती है कि ''संघ'' वाले हिंसा स्वयं नही करते हैं परंतु दूसरों को उकसाते रहतें हैं।

इंदिरा तो तानाशाह थीं, यदि उनके जगह हमारे कमजोर प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह होते तो कल्पना करें कि क्या होता ? बांगला देश तो ना बनता, खालिस्तान भले ही बन जाता। क्या आज इंदिरा जी होंती, तब भी सीमा पर हमारे सैनिकों के सिर काटे जाते ? क्या आज की तरह उस समय भी बार–बार सीमा पर हत्याएँ होती ? क्या देश के भीतर नक्सलवाद जैसे विषधर फन उठाते और अनेक देश वासियों को काल कवलित कर देते ?

काश कोई ऐसा तानाशाह फिर शासन संभालें जो बार बालाओं के बजाय वीर–बालाओं को प्रतिष्ठापित करें, जो भ्रष्टाचारियों, बलातकारियों का रक्षक बनने के बजाय सभी प्रकार के अपराधियों का दमनकारी हो, जो बिना भेदभाव के सभी जातियों (भारतीयों) को जीने व सम्मान से रहने की गारंटी दे सके, जो देश की सीमाओं की रक्षा करने को कृत संकल्प हो। कमजोर प्रधानमंत्री केवल अपराधियों, देश द्रोहियों, समाज विरोधियों का प्रिय हो सकता है। हमें धृतराष्ट् नही कृष्ण चाहिए। काश दुर्गा इंदिरा जी होती तो आज द्रोपदी (दुर्गा नागपाल) का चीर हरण न हो पाता। क्या आप अंम्बेडकर जी की 1929 की पत्रिका ''बहिष्कृत भारत'' वह पैराग्राफ छापने या मुझे देने की कृपा करेगें ? जिसमें अंम्बेडकर जी ने इस्लाम ग्रहण करने की बात लिखी है।

उत्तर–मैने ज्ञान तत्व के सभी पाठको को दो बार पत्र भेजे कि आप को ज्ञान तत्व मिलता है या नही काम आता है कि नही । जिनके उत्तर नही आये उनके ज्ञान तत्व धिरे–धिरे कट रहे है। कटने वालो को तीसरी बार एक अंतिम पत्र भी जा रहा है और उसके बाद भी उत्तर नही आएगा तो हम समझ लेंगे कि उन्हे ज्ञान तत्व मिलता नही है या वे पढते नही है या उन्हे पसंद नही है। यह अलग बात हैकि आप को ज्ञान तत्व लगातार जाता रहा है। संभवतः डाक की गडबडी के कारण आपको मिल नही रहा। आपका सोचना है कि भारत की स्वतंत्रता में गांधी के अहिंसक मार्ग को अपेक्षा सुभाष चन्द्रबोस के सैनिक संघर्ष का मार्ग प्रभावशाली था। जबकि मेरा ऐसा मानना हैकि सुभाष चन्द्रबोस का मार्ग भारत को स्वतंत्रता नही दिला पाता। गॉधी का मार्ग ही उचित था। मैने तो बहस को टालने के लिए लिख दिया था, कि यह बहस अनावश्यक है क्योकि स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए गॉधी मार्ग को उपयोगिता प्रमाणीत हो चुकी है। गॉधी का सुभाष को सर्मथन ना देना किसी भी रूप से अंग्रजो का सर्मथन तब तक नही कहा जा सकता जब तक गॉधी सुभाष के मार्ग को असफल मानते थे। और जब किसी मार्ग के सफलता पर संदेह और कोई अन्य मार्ग उपलब्ध तो सफलता की विश्वास वाले मार्गका सर्मथन किया जाय न कि असफल होते हुए मार्ग का। जैसे कि वर्तमान समय में मुझे विश्वास हो गया है कि संघ परिवार का मार्ग हिन्दुत्व की सुरक्षामें सफल नही हो सकेगा तथा दूसरा मार्ग उपलब्ध है तो मैं क्यो संघ परिवार के मार्ग का समथन करू। गॉधी जी ने जो किया वो ठीक किया।मैंभी रहता तो वही करता धर्म निर्पेक्षता किसी धर्म के लेबल लगने से नही आती और न ही किसी लेबल के हटने से आती है। चाहे किसी भी धर्म का व्यक्ति हो यदि वह दूसरे धर्म की स्वतंत्रता मे बाधक नही तो उसे धर्म निरपेक्ष माना जा सकता है भले ही वह कितना ही धार्मिक कट्टर क्यो न हो। मै तो अपने को कट्टर हिन्दू मानता हूँ और कहता भी हूँ। फिर भी मुझे कोई संमप्रदायिक नहो कहता।

इंदिरा जी तानशाह थीं, इसीलिए पाकिस्तान युद्ध का श्रेय भी प्रधानमंत्री को मिला, अन्यथा यह प्रधानमंत्री का काम नही होता कि वह गृहमंत्री का भी श्रेय ले ले, और विदेश मंत्री का भी । वर्तमान मनमोहन सिंह सरकार में यदि ऐसा कुछ होगा तो मंत्रि मण्डल निर्णय करेगा और श्रेय भी वही लेगा ना कि मनमोहन सिंह को। प्रधानमंत्री को कभी न तानाशाह होना चाहिए ना मजबूत। गृहमंत्री को अवश्य ही मजबूत होना चाहिए और विदेशमंत्री को भी अथवा रक्षामंत्री को भी ।

मुझे याद है कि इंदिरा गॉधी से भी ज्यादा जर्मनी में हिटलर को जय जय कार होती थी। और इस जय जयकार नें ही हिटलर के देश को कितने लंबे समय तक गुलाम बना दिया यह इतिहास जानता है। बिना सोचे समझे हिंसक उन्माद यदि हमेशा ही लाभदायक होता तो आज मुज्जफर नगर में इतनी बडी संख्या में मुसलमान नही मारे जाते। आप मानते है कि देश समाज से बडा है। मैं मानता हूँ कि समाज देश से बडा है। तानाशाह देश की सीमाओ का विस्तार कर सकता है संभव है कि वह देश के लोगो को गुलाम बना दें। चीन और रूस भी अन्तोगत्वा अपनी नीति बदलने में विवश हुए। अनेक मुस्लिम तानाशाह पिछले वर्ष मारे गये अब प्रा विश्व एक परिवार के समान विकसित हो रहा है। जिसमें ना किसी तानाशाह की भूमिका हो सकती है ना होना चाहिए। आज भारत को वीर बालाओ को प्रतिष्ठित करनें की जितनी आवश्यकता है उससें कम बार बालाओ की नही । जब देश की सीमाओं को खतरा हो तब शक्ति की पूजा के राणे भी बज सकते है किंतु यदि शासक को आदत पड जावे कि वह समाज को गुलाम बनाकर रखने के लिए रोज ही सीमाओ पर आवाज लगाने लगें तो ऐसे झूठे मक्कार शासक से पिण्ड छुडा लेना चाहिए। काश दुर्गा रूपी इंदिरा आज होती तो दुर्गा नागपाल जैसी महिला जेल में भो डाली जा सकती थी। आप भूल रहे है कि कृष्ण सिर्फ युद्ध प्रिय थें। कृष्ण संतुलित थें संयमित थें। आज देश को ऐसे कृष्ण की आवश्यकता है जो हर बात पर युद्ध का नगाडा न बजाने लगें जो पहलें हर तरह समझौते का प्रयास करें और यदि अंतिम स्थिति होगी और युद्ध अवश्ययम्भवी हो जायेगा तो उस स्थिति में भी मजबूती के साथ टक्कर दी जाय। आपने अम्बेडकर जी द्वारा 1929में लिखी गई पत्रिका ''बहिष्कृत भारत'' के अंश मांगे है। ये अंश मुझे विस्फोट डांटकाम के संजय तिवारी जी से प्राप्त हुए है। वे आप को दे सकते है आप चाहेगें तो मै उनका पता आपको भेज दूंगा।

6 कुलदीप नैयर :– पंजाब केसरी से।

यह दुनिया भर मे मालूम है कि भारत भारी आर्थिक संकट मे है। लेकिन अभी तक लोग यह नही जान पायें हैं कि इस आर्थिक अव्यवस्था को वजह राष्ट्पति प्रणव मुखर्जी और वित्तमंत्री पी. चिंदम्बरम के वे निर्णय ह जो उन दोनो ने वित्तमंत्री के रूप मे लिए हैं। प्रणव मुखर्जी जनवरी 2009 से 2012 तक और उनके पहले चिदम्बरम 2008 के आखिर तक वित मंत्रालय के मुखिया थे।

मुखर्जी तो राष्ट्पति भवन के ऐशों आराम मे रहते हैं और चिदम्बरम अपना बचाव इन बडे–बडे वायदों से कर रहें है कि वे अभी भी अर्थ व्यवस्था को ठीक करने मे लगे हैं। अभी की स्थिति के लिए दोनो जवाबदेह हैं। उन्हें बताना चाहिए कि उन्होनें ऐसे कदम क्यों उठाए जिससे विकास का तालमेल बिगड गया। सरकार के कामकाज मे पारदर्शिता नही होने की वजह से यह सिर्फ मुट्ठी भर लोगों को पता है कि उन्होने कौन सी गलतियॉ की है।

ऐसी गलतियों मे से एक है मुखर्जी जी की वह गलती जिसमें उन्होने एक विदेशी मोबाइल कम्पनी पर 1200 करोड रूपये का टैक्स लगा दिया। इस निर्णय को पिछले प्रभाव से लागू किया गया। 8 सितम्बर 2010 को सुप्रीमकोर्ट मे मुकद्मा हार जाने के बाद सरकार ने इसके लिए अध्यादेश जारी कर दिया और फिर वित्त कानून 2010 बनाया ताकि बीत प्रभाव से ही टैक्स लगाने का निर्णय किया जा सके। इस कानूनी प्रावधान से भारत मे विदेशी निवेश करने वाले डर गये जबकि निवेश की भारत को सख्त जरूरत है। थाली मे भरकर रियायत मिलने के बाद भी वालमार्ट को भारत की धरती तक खींचा नही जा सका है। विदेशी निवेंशको ने बडी मात्रा मे अपना पैसा वापस खींच लिया है। सिर्फ कुछ सप्ताहों के भीतर यह सब हो गया। पैसा वापस ले जाने का यह सिलसिला अभी थमा नही है।

प्रधानमंत्री परिणाम का अन्दाजा नही लगा पाए। वास्तव मे 2008 मे जो गडबडी चिंदम्बरम ने पैदा की थी, उसे देखकर प्रधानमंत्री को वित्त मंत्रालय अपने हाथ मे ले लेना चाहिए था क्योंकि आर्थिक मामलों मे उन्हें महारत है। दुर्भाग्य से कोयला मंत्रालय मे वे अच्छा नही कर पाए, लेकिन वित्त मंत्रालय मे वे बेहतर कर सकते थे।

भारत कोयले का आयात कर रहा है जबकि इसे निर्यात करना चाहिए था, जो यह पहले करता था। संम्भव है कि मनमोहन सिंह कोयला खदानो के ऑबटन मे हुए भ्रष्टाचार के लिए खुद जिम्मेदार नहीं हों लेकिन हजारों कराडों की हेराफेरी हुई है। हो सकता है कि पूरी कहानी बाहर नही आए क्योंकि कुछ फाइलें गायब है। सरकार ने सुप्रीमकोर्ट के सामने इसे स्वीकार किया है। सरकार इनके लिए ''तथाकथित'' फाइल शब्द का इस्तेमाल कर रही है।

सीबीआई के मुताबिक 157 फाइलें गायब है। गायब फाइलों मे कोयला खदानो के ऑबंटन से सम्बन्धित कुछ पत्र और टिप्पणियॉ है। प्रधानमंत्री यह बताकर कि वे फाइलों के रखवाले नही हैं अपने को इस मामले से मुक्त नही कर सकते। कोयला विभाग उनके जिम्मे था। इस घोटोले की जॉच कर रहे सीबीआई के उच्च अधिकारी ने कहा है कि उन्हें प्रधानमंत्रो से पूछताछ करने की जरूरत पड सकती है क्योंकि 2006 से 2009 के बीच कोयला मंत्रालय के वे प्रभारी थे। क्या विभाग जो कुछ भो कर रहा था उसमें प्रधानमंत्री की मिली भगत थी क्योंकि उनकी व्यक्तिगत ईमानदारी संदेह से बाहर है।

दोषी को कानून के गिरफ्त मे लाने के लिए वे कुछ कर सकते थे लेकिल उन्होंने कुछ नही किया क्योंकि वे राजनैतिक रूप से कमजोर हैं। उनकी दूसरी गलती यह रही कि वे प्रणव मुखर्जी पर बहुत ज्यादा निर्भर थे और उन्हें मंत्रियों के समूह की कई कमिटियों का अध्यक्ष बना दिया। उन्हें कई कठिनतम समस्याओं के समाधान की जिम्मेदारी दे दी थी। दुर्भाग्य से मुखर्जी जी को अपने वित्त विभाग को संम्भालने के लिए समय नही था और स्थिति बिगडने लगी। मुद्रा स्फीति मे भारी बढोत्तरी (10प्रतिशत) ने संकट बढा दिया है। एक औसत आदमी की आमदनी पहले जैसी है लेकिन खर्च बढ गया है क्योंकि सभी आवश्यक चीजों की कीमत बढती ही जा रही है। उनके जीवन चलाने का खर्च और भी ज्यादा होता अगर सरकार ने पेट्रोल, डीजल, रसाई गैस जैसी चीजों पर सब्सिडी नही दी होती। अंर्तराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आइएमएफ) के मुताबिक उपर के 20 प्रतिशत लोग नीचे के 20 प्रतिशत लागों के मुकाबले ज्यादा सब्सिडी पा रहें हैं।

संम्पन्न लोग इतने ताकतवर हैं कि उन्हें कोई छू नही सकता। देश के बडे व्यापारिक घराने कई सांसदों को पैसा देते हैं और वे यह ख्याल रखतें हैं कि इन घरानों को कोई नुकसान नही पहुचें। लोकसभा चुनाव 10 महीने बाद होना है। लोकसभा सीट पर चुनाव लडने का खर्च औसतन करीब 10 करोड रू. है। राजनैतिक दल कोष के लिए पहले से इन घरानों के संम्पर्क मे हैं। वे उनके गलत कामों को चुनौती कैसे दे सकते हैं ? इस बात की पुष्टि इसी से हो जाती है कि सभी पॉर्टियॉ ने एक राय होकर मुख्य सूचना आयुक्त के इस निर्णय से अपने को दूर हटा लिया कि आरटीआई कानून राजनतिक पार्टियों पर भी लागू होता है।

फिर भी अभी भी समस्या यह है कि वर्तमान आर्थिक संकट से बाहर कैसे निकला जाए। प्रधानमंत्री ने संसद मे खुद स्वीकार किया कि ''देश कठिन समय का सामना कर रहा है।'' यह तर्क देना उचित ही रहेगा कि गडबडी सरकार की वजह से है। कोई शासन नही है, कोई नेतृत्व नही और ना ही कोई मार्गदर्शन। मझे नही पता कि प्रधानमंत्री के मन मे कौन सा सुधार है। उन्हें आर्थिक नितियॉ फिर तैयार करनी होगी जिसमें रोजगार के अवसर हों, आवश्यक चीजें सस्ती हों और विकास दर जो 50 और 60 के दशक के चार प्रतिशत वाले हिन्दु विकास दर की ओर लौट गई है, मे बढोत्तरी हो। उत्पादन तो तीन प्रतिशत पर ही अटक गया है ओर इसमें मामूली बढोत्तरी से कुछ बात नही बनेगी। मै चाहता था कि एक नया चुनाव हो गया होता जैसा मैने तीन महीने पहले कहा था। निवेंशकों को दूर रखने वाली अनिश्चतता अब तक खत्म हो गई होती और लोग भी नई सरकार के साथ सहज हो गये होते लेकिन ज्यादातर पार्टियां खासकर कांग्रेस के सांसद चाहतें हैं कि वे लोकसभा के पूरे कार्यकाल का आनंद लें। उनमें बहुतों को मालूम है कि वे फिर से चुनकर नही आएगें।

राजनैतिक परिदृश्य को लेकर पनपी चिंताओं की छाया भविष्य पर पड रही है। जब तक किसी एक पार्टी को पूरी जीत नही मिल जाती, जिसकी संम्भावना बहुत कम है। अगली सरकार भी मिलीजुली होगी। वह कोई कडे फैसले लेने की स्थिति मे नही होगी, जबकि गहरे हो रहे संकट पर काबू पा लेने के लिए भारत को इसकी जरूरत है। यह कहना जरूरी नही है कि पार्टियों मे बुनियादी बातों पर सहमति

होनी चाहिए लेकिन चुनाव के पहले इसकी संभवना नही दिखती। चाहे यह अभी हो या बाद मे लकिन यही है जिसकी देश को जरूरत हैं। हो सकता है मै ही गलत सोच रहा हूॅं। शायद भारत की कहानी समाप्त हो गई सी लगती है, कम से कम आने वाले कुछ सालों के लिए।

उत्तर :– आप बहुत अच्छे विचारक हैं और मैं आपके विचार हमेशा ध्याान से पढता हूॅं, क्योंकि आप किसी एक विचारधारा से प्रभावित होकर जानबूझकर कोई असत्य नही लिखते, इस लेख मे आपने जो कुछ भी लिखा है, उनमें से कुछ बातें मेरे विचार से सही है और कुछ सही नही दिखी। यह सही है कि तत्कालीन वित्तमंत्री प्रणव मुखर्जी ने एक विदेशी कम्पनी को बारह हजार करोड का दण्ड देने के मुददे को व्यक्तिगत प्रतिष्ठा से जोडा। उनकी जिद ने विदेशी निवेशको का बहुत विश्वास तोडा। यह भी सही है कि भारत का आयात निर्यात से अधिक है। जिसकी भरपाई के लिए विदेशी निवेशको का भारत में आना अधिक जरूरी था। जो इससे उल्टा हो रहा है। मै विपक्ष को दोष नही देता हूॅं क्योकि उसने विदेशो निवेशको की निरंतर आलोचना की किन्तु सरकार की कार्यप्रणाली तो सोच कर ही होनी चाहिए थी। किन्तु मै यह नही समझा की चिदम्बरम ने कहॉ भूल की। मेरे विचार मे तो चिदम्बरम ने ही अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने का प्रयास किया। मैं यह मानता हूॅं कि यदि चिंदम्बरम ने कठोर आर्थिक कदम नही उठाये होते तो अर्थ व्यवस्था का क्या हाल होता यह कहना मुश्किल है। आप ने यह लिखा है कि निचले तबको की आर्थिक स्थिति जितनी सुधरती है उससे कई गुना अधिक महगाई बढ जाती है। आप की यह बात मरे विचार में पूरी तरह असत्य है। निचले तबको की भी आर्थिक स्थिति महगाई की अपेक्षा अधिक सुधर रही है। पॉच वर्ष पूर्व जब नरेगा शुरू हुआ था तब नरेगा में दैनिक मजदूरी 60 रूपया दिया जाता था। आज नरेगा की दैनिक मजदूरी 140 रूपये से उपर है। निश्चित रूप से पॉच वर्षो में वस्तुओ के मूल्य इतने नही बढे है। टी वी वालो की बाते छोड दें। जो प्रतिवर्ष ही वस्तुओं के मूल्य दो गुना बता देते है, क्योकि उन्हे तो यथार्थ से कोई लेना देना नही है। विपक्ष का भी कोई कथन भरोसे मंद नही होता है। लेकिन चूंकि आपने लिखा ह इसलिए विचार करना आवश्यक है। यदि निचले तबको को दी गई सब्सीडी को जोड दे तो महगाई का प्रभाव और भी कम हो जाता। आप की यह बात सही हैकि सब्सीडी का लाभ मध्यम या उच्च वर्ग अधिक उठाता है किन्तु यह बात सही नही कि निचला तबका बिल्कुल लाभ नही उठाता।आप ने एक बात और लिखी है कि मिली जुली सरकारो की अपेक्षा बहुमत वाली सरकार आनी चाहिए। मैं आपकी इस बात से भी सहमत नही हूॅं। राष्ट्र की समस्या के समाधान में स्थिर और बहुमत वाली सरकार का होना अच्छी बात है किन्तु ऐसी बहुमत वाली सरकारे हमूशा ही मनमानी करती है निरंकुश हो जाती है और समाज को गुलाम बनाकर रखती है। राष्ट्र उन्नति करता रहे और समाज गुलामी की ओर बढता रहे ऐसी कामना करना भी ठीक नही।आपने तत्काल चुनावो की आवश्यकता बताई जिसका मेरे विचार से कोई समाधान नही है मेरे विचार में सच बात तो यह है कि सोनिया गॉधी ने बीच मे ही राहुल को प्रधानमंत्री बनाने का गुप्त प्रयास किया और उसके लिए अर्थव्यवस्था को लगातार खराब किया कि इससे दुखी होकर मनमोहन सिंह त्याग पत्र दे दे। लेकिन मनमोहन सिंह ने सबकुछ समझते हुए भी त्याग पत्र देने की इच्छा व्यक्त नही की जब तक सोनिया जी प्रत्यक्ष ना कह दे।इस आपसी खीचतान में भारत की आर्थिक व्यवस्था का बंटाधार हो गया। करीब एक वर्ष पहले सोनिया जी को अनुभव हुआ कि इस बदनामी से मनमोहन सिंह की कम और कांग्रस पार्टीको ज्यादा नुकसान हो रहा है तब उन्होने मार्ग बदला । इसे सुधारते सुधारते काफी समय लग गया। स्पष्ट है कि वामपंथी हर आर्थिक सुधार का विरोध करते थें। वामपंथियो से मनमोहन सिंह मुक्त हुए तो ममता बनर्जी सरीखी स्वार्थी महिला ने मनमोहन सिंह के पैरो को जकड लिया।बडी मुश्किल से ममता जी से पिंड छुटा ह तब कुछ गाडी आगे बढना शुरू हुई है। मैं आपकी इस बात से सहमत नही हूॅं कि डीजल पेट्रोल की मूल्य वृद्धि महगाई बढाने वाल कदम है । मेरे विचार मे सच बात यह है कि डीजल पेट्रोल की भारी मूल्य वृद्धि भारत को आर्थिक संकट से उबार सकती है।सस्ता डीजल पेट्रोल भारत की एक समस्या है समाधान नही । आप ने कोयला धोटाले की चर्चा की है उसके इस भाग से मै सहमत हूॅं कि हमें कोयले की आयात करने की जगह निर्यात करने लायक होना चहिए था। किन्तु मै यह नही समझा कि इसमें पूरी सरकार की गलती है या मनमोहन सिह की। मनमोहन सिंह का कौन सा कदम सरकार को कोयला संबंधो निर्णय लेने में बाधक बना। यदि आप जैसा व्यक्ति भी जानते हुए भी रिमोट कंट्रोल सोनिया गॉधी को बचाकर बेचारे कठपुतली मनमोहन सिंह को दोषी बताऐंगें तो सच बोलन की हिम्मत कौन करेगा। आशा है कि आप इन बातो पर विचार करेंगें।

स्चना–1

दिल्ली मे संम्पन्न बैठक को संक्षिप्त जानकारी

30 और 31 अगस्त को अपने देशभर के प्रमुख कार्यकर्ताओं की बैठक संम्पन्न हुई। बैठक का विस्तृत विवरण अगले अंक मं जाएगा किंतु संक्षिप्त सूचना यह है कि करीब एक वर्ष बाद 15 अगस्त से 15 अक्टूबर तक दो महिने की यात्रा पूरे देश भर में होगी। इस यात्रा मे लगभग 120 स्थानों पर मींटिगें होंगी। प्रयास किया जाएगा कि मींटिग में मै अर्थात बजरंग मुनि, आचार्य पंकज , प्रमोद कुमार वात्सल्य, रमेश चौबे तो अवश्य रहेगें, साथ में अन्य स्थानों पर अन्य प्रमुख कार्यकर्ता भी आ सकतें है। मींटिग के लिए हमारे कायालय की ओर से ना किसी प्रकार का कोई आर्थिक सहयोग दिया जाएगा ना आपसे अपेक्षा की जाएगी। आप चलते समय विदाई के रूप में 11 रू. भी दे सकते हैं। हमारे भोजन या निवास की आप जैसी भी व्यवस्था करेगें, वह हमारे लिए पर्याप्त होगी और यदि कहीं कोई विशेष दिक्कत होती ह तो उसकी व्यवस्था हम स्वयं भी कर सकतें हैं। हम आप पर कोई आर्थिक बोझ नही डालेगें। आप अपने स्थानीय खर्च के लिए चाहें तो चंदा इकट्ठा कर सकतें हैं। हम आपसे इस खर्चे का ना हिसाब मॉगगें और ना बचा हुआ धन लेगें। आप इस बात की योजना बनाऍं कि आप सभा रखना चाहतें हैं या बैठक अथवा आपसी चर्चा। यह सब आपके उपर निर्भर करेगा। आप जहॉ–जहॉ भी मींटिग रखना चाहें,एक स्थान पर या एक से अधिक स्थान पर उसकी सूचना हमें शीघ्र दें। जिससे कि हम अगले दो–तीन महीनें मे ही पूरे कार्यकम को अंतिम रूप दे सकें। आपसे निवेदन है कि आप उन स्थानो के नाम हमें लिखकर भेजें जिन्हें हम इस यात्रा मे शामिल करें।

स्चना–2

जा साथी हमे, सहयोग समझकर अथवा ज्ञानतत्व का शुल्क समझकर जो राशि भेजना चाहें, वे मेरे पते पर मनीआर्डर कर सकतें हैं अथवा अपने स्थानीय प्रमुख को भी दे सकतें हैं अथवा बैंक में भी (भारतीय स्टेट बैक) रामानुजगंज 11374646729 नं. पर जमा करा सकतें हैं।